अवधारणा–पत्र

राष्ट्रीयता भारत की एकता और अखंडता के लिए अति आवश्यक तत्व है। भारत के संदर्भ में राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रवाद क्या है? यह प्रश्न हमें प्रायः चिंतन के लिए बाध्य करता है। सदियों से विविधता में एकता भारत की पहचान रही है। किन्तु यह तथ्य सच में आश्चर्यजनक है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तथा गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक अनन्य विविधताओं से भरा भौगोलिक प्रदेश एक राष्ट्र है। इस अत्यधिक विविधता के मध्य एकता का वह सूत्र कौन सा है जिसके कारण हम भारत के लोग संगठित होकर एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में खड़े हैं। निश्चय ही वह सूत्र राष्ट्रीयता की भावना है। स्वतंत्रता आन्दोलन और उससे भी पूर्व से लेकर समकालीन समय तक राष्ट्रीयता ही वह सूत्र है जिसने भारत की एकता और अखंडता को बहुत हद तक अक्षुण्ण बनाए रखा है। इसी हेतु राष्ट्रीयता के विभिन्न आयामों पर व्यापक विचार–विमर्श के लिए इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

वर्तमान समय में अधिकतर लोगों के द्वारा राष्ट्र, राज्य एवं देश को पर्यायवाची शब्द मानकर प्रयोग किया जा रहा है, इसलिए राष्ट्र के मूल भाव को समझने से पूर्व देश एवं राज्य की अवधारणा पर विमर्श आवश्यक है। वस्तुतः देश एक भौगोलिक इकाई है जहाँ लोग निवास करते हैं। वहीं उस जनसमूह के शांतिपूर्ण जीवन हेतु न्याय, शासन व्यवस्था तथा बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा हेतु की गई वैधानिक व्यवस्था उस देश को राज्य बनाता है, जो कि एक राजनीतिक इकाई है। इन दोनों से विशिष्ट राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है जहाँ निवास करने वाले लोग उस भूमि को मातृभूमि के रूप में स्वीकार करते हैं। राष्ट्रीयता मूलतः एक भाव है जिसके कारण एक निश्चित भूभाग पर रहने वाला जनसमूह एकता में विविधता को महत्व देते हुए आध्यात्मिक जीवन शैली को अपनाकर एक संस्कृति का विकास करता है।

राष्ट्रीयता एक ओर भारत की कई समस्यायों का समाधान है तो दूसरी ओर कई समस्याएं भारत की राष्ट्रीयता को चुनौती भी प्रदान कर रही हैं। उदाहरण के लिए राष्ट्रीयता भारत में स्थानीय विषमताओं से उपजे क्षेत्रवादी असंतोष का समाधान है। वहीं कश्मीरी अलगाववाद हमेशा से ही भारतीय राष्ट्रीयता के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करता रहा है। जाति के आधार पर बँट जाने के बावजूद भारतीय समाज स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता के नाम पर संगठित होता आया है। सांप्रदायिक वैमनस्यता पर प्रायः राष्ट्रीयता भारी पड़ती है। इस प्रकार हमें भारत की कई समस्याओं को संबोधित इस राष्ट्रीयता पर व्यापक विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है।

भारत की एकात्मता को अक्षुण्ण बनाए रखने और उसे अत्यधिक सुदृढ़ बनाने के लिए भारत में राष्ट्रीयता की भावना को और अधिक बलवती बनाने की आवश्यकता है। भारत के विभिन्न हिस्सों में अलगाववादी आन्दोलन हों या जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा आदि के आधार पर विखंडित भारतीय समाज; इन

समस्याओं का समाधान राष्ट्रीयता ही है। भारत के संविधान की प्रस्तावना में भले ही देश की 'एकता और अखंडता' को अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प लिया गया हो परन्तु लोकतान्त्रिक प्रणाली में सत्ता की होड़ में प्रायः सभी राजनीतिक दलों ने भारत को संगठित करने के स्थान पर किसी न किसी रूप में विखंडित ही किया है; चाहे वह विभाजन भौतिक स्तर पर हो अथवा मानसिक स्तर पर। भारत की 'एकता और अखंडता' की अक्षुण्णता के लिए कृत–संकल्पित तथाकथित 'धर्मनिरपेक्ष भारतीय राजनीति' ने भारतीय जनमानस को सामजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, क्षेत्रगत आदि प्रायः सभी आधारों पर खंडित ही किया है। कारण स्पष्ट है– वोट–बैंक की विभाजनकारी राजनीति।

इस देश में राज्यों के सामान्य प्रशासनिक विभाजन के लिए खूनी संघर्ष तक हुए हैं। इसे सामान्य प्रशासनिक विभाजन मानकर एक मत्त्वपूर्ण समस्या की ओर से हम अपना मुंह नहीं मोड़ सकते। अनेक बुद्धिजीवियों के द्वारा बार–बार जोर देकर भारत को एक बहुसांस्कृतिक राष्ट्र बताना, भारत के प्रत्येक प्रशासनिक राज्यों को भिन्न–भिन्न राष्ट्रीयता मानना; भारतीय राष्ट्रीयता को भीतर से खोखला करने का षड्यंत्र है। इस प्रकार का चिंतन एवं राजनीतिक व्यवहार भारतीय एकात्मता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है तथा भारतीय एकात्मता के आंतरिक एवं बाह्य शत्रुओं को अखंड भारत राष्ट्र की संकल्पना के विरोध में एक पुख्ता तर्काधार उपलब्ध करवाता है। प्रथमतः इस तरह के तमाम प्रयासों पर वैधानिक रूप से पूर्णविराम लगाने की आवश्यकता है। साथ ही, इन षड्यंत्रों के समानान्तर एक वैकल्पिक चिंतन को समृद्ध करने की भी आवश्यकता है जो अंततः भारतीय एकात्मता को सुदृढ़ करे।